इकाई 15 नशीले पदार्थों का व्यसन तथा मद्यपान

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 उभरता प्रचलन

15.3 महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं की परिभाषा

15.3.1 नशीली दवा किसे कहते हैं?

15.3.2 नशीली दवाओं का सही और गलत उपयोग

15.3.3 लत, सहन-शक्ति और निर्भरता

15.4 एल्कोहल से संबंधित तथ्य

15.5 नशीली दवाओं से संबंधित तथ्य

15.5.1 उद्दीपक दवाएँ

15.5.2 अवसादक दवाएँ

15.5.3 विभ्रांतिकारक दवाएँ

15.5.4 गांजा, भांग आदि

15.5.5 स्वापक (नींद लाने वाली) दवाएँ

15.6 लत लगने की प्रक्रिया

15.6.1 शराब की लत

15.6.1.1 आरंभिक अवस्था

15.6.1.2 मध्य अवस्था

15.6.1.3 स्थायी अवस्था

15.6.2 नशीली दवाओं की लत

15.6.2.1 आरंभिक अवस्था

15.6.2.2 मध्य अवस्था

15.6.2.3 स्थायी अवस्था

15.7 लत के कारण

15.7.1 शारीरिक कारण

15.7.2 व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक कारण

15.7.3 सामाजिक-सांस्कृतिक/परिवेश संबंधी कारण

15.8 नशीली दवाएँ, अपराध और राजनीति

15.9 हस्तक्षेप : उपचार, पुनर्वास और रोकथाम

15.10 सारांश

15.11 शब्दावली

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- नशीली दवाओं, शराब के दुरुपयोग और इनके व्यसन के संबंध में विश्व की स्थिति के बारे में बता सकेंगे;
- नशीली दवाएँ क्या हैं? और व्यसन लगने की प्रक्रिया कैसे चलती है? इसे समझा सकेंगे;
- व्यसन के कारणों की व्याख्या कर सकेंगे;
- नशीली दवाओं के सेवन और अपराधों के बीच संबंध की चर्चा कर सकेंगे; और
- व्यापक पुनर्वास कार्यक्रमों और शराब तथा नशीली दवाओं के दुरुपयोग की रोकथाम के महत्त्व समझा सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने अपराध और अपचार के बारे में विचार किया था। इस इकाई में हम नशीली दवाओं और शराब के व्यसन के बारे में चर्चा करेंगे। नशीली दवा और शराब की लत दोनों गुमराह करने वाले कार्य हैं। इस इकाई के आरंभ में हम दवा के उपयोग और दुरुपयोग, दवा की लत, सहन-क्षमता और निभरता जैसी कुछ महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं को समझाएँगे। उसके बाद हम शराब और नशीली दवाओं के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख करेंगे। यहाँ शराब और दवाओं के व्यसन की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। साथ ही लत लगने के कारणों का विवेचन किया गया है। इसके अलावा नशीली दवा के सेवन, अपराध और राजनीति के बीच संबंध पर विचार किया गया है। अंत में हमने व्यसन के उपचार, पुनर्वास और रोकथाम के बारे में चर्चा में करेंगे।

नशीली दवाओं और शराब के व्यसन ने आज विश्व-व्यापी संकट का रूप धारण कर लिया है। प्राकृतिक और प्रयोगशालाओं में निर्मित दवाओं की आपूर्ति और माँग लगातार बढ़ रही है। इसका प्रभाव बहुत से नए देशों पर पड़ रहा है। और नशेड़ियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस कारण राष्ट्रीय उत्पादकता पर बुरा असर पड़ा है। बहुत से देशों ने इस समस्या को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है और इसका हल ढूँढने के लिए आवश्यक उपाय कर रहे हैं। इस इकाई में नशीली दवाओं और शराब के व्यसन की समय को नीचे दिए संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है :

i) यह समस्या किस सीमा तक है

ii) दवाओं और शराब की प्रकृति

iii) व्यसन के कारण

iv) पुनर्वास कार्यक्रम

v) नशीली दवाओं और शराब के व्यसन में परस्पर संबंध

15.2 उभरता प्रचलन

अगर पूरे विश्व की स्थिति से संबंधित आँकड़ों की जाँच की जाए तो पता चलता है कि शराब, अफ़ीम और चरस ऐसी कुछ मुख्य नशीली दवाएँ हैं जिनका गलत इस्तेमाल किया जाता है (इनके बारे में विस्तार से आगे बताया गया है)। महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों पर इनके अधिक व्यसनी हैं। पिछले कुछ वर्षों से खासकर हेरोइन की लत लोगों में बहुत तेज़ी से बढ़ रही है (इसे आगे विस्तार से बताया गया है)। इन नशीली दवाओं को इंजेक्शन द्वारा लेने से "एड्स" जैसी

भयंकर बीमारियों के होने को भारी ख़तरा रहता है। कभी-कभी अधिक मात्रा में दवा के सेवन से मृत्यु तक हो जाती है।

पहले दवा की लत कुछ वर्गों तक सीमित थी, लेकिन अब इनके सेवन का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। कुछ लोग तो एक साथ कई-कई दवाओं को सेवन भी करते हैं, जैसे शराब के साथ नशीली दवाओं का सेवन बहुत अधिक होने लगा है। अब पहले की अपेक्षा काफी कम आयु में दवाओं और शराब का सेवन किया जाने लगा है। भारत में शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में यह समस्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है जिसके निम्न कारण हैं :

i) लोगों में बढ़ती समृद्धि

ii) आधुनिक जीवन के तनाव

iii) अत्यधिक आर्थिक और सामाजिक असमानता

iv) जीवन के प्रति बढ़ती हुई असंतोष की भावना

यदि हम नशीली दवाओं और शराब के उत्पादन को लें, तो हम देखते हैं कि लगभग सभी देशों में कड़े सरकारी नियंत्रण के बावजूद इनका उत्पादन बढ़ा है। इस समस्या से निपटने के लिए (1) सरकारों ने जबर्दस्त निगरानी शुरू कर दी है, (2) पोस्त की खेती और ग़ैर-कानूनी प्रयोगशालाओं को नष्ट करने के आदेश जारी कर दिए हैं, (3) नशीली दवाओं के अवैध व्यापार (आर्थिक लाभ पाने के लिए इन्हें बेचना-खरीदना) के विरुद्ध सख्त कानून बना दिए हैं, और (4) नशीली दवाओं के सेवन को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग का प्रस्ताव किया है।

इस विषय में विभिन्न देशों की सरकारें नशीली दवाओं के प्रसार की रोकथाम के लिए शिक्षा कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दे रही हैं। इस लत की रोकथाम के लिए सरकारी और ग़ैर-सरकारी एजेंसियाँ जन-जागरण कार्यक्रम भी चला रही हैं। लेकिन शराब के सेवन के रोकथाम के लिए इतने ज़ोरदार प्रयास नहीं दिखाई देते क्योंकि इसे-दूसरे नशीले पदार्थों की अपेक्षा अधिक सामाजिक स्वीकृति मिली हुई है और यह लोगों के रोज़मर्रा के जीवन का एक हिस्सा बन चुकी है। अधिकांश देशों में शराब के उत्पादन पर अधिक कर लगाने के अलावा इसके उत्पादन, बिक्री और उपभोग पर किसी प्रकार की पाबंदी नहीं लगाई है। बहुत से देशों में शराब उनकी आय का प्रमुख साधन है। समाज का बहुत बड़ा भाग नशीली दवाओं की लत के बजाय शराब की लत का अधिक शिकार है। यह समाज के सभी सामाजिक-आर्थिक वर्गों को प्रभावित कर रहा है। आज इस बात की माँग बहुत जोर-शोर से होने लगी है कि नशीली दवाओं की लत तरह ही शराब की लत को भी गंभीर सामाजिक समस्या माना जाए।

इस बात को समझना आवश्यक है कि नशे या व्यसन को एक ऐसे प्रचलन के रूप में क्यों लिया जाता है, जो व्यक्ति को समाज से अलग और वंचित कर देता है। अनेक समाजों में शराब पीना जीवन का एक अंग बन गया है। कुछ लोगों में कुछ नशीली दवाओं को कानूनी मान्यता देने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। तब हम यह कैसे कह सकते हैं कि नशे की लत हमें समाज से विमुख या वंचित करती है। इसका कारण जिस दवा की लत होती है उससे होने वाली तबाही है। उस व्यक्ति को व्यसनी या नशेड़ी कहा जाता है :

i) जो नशीली दवा या शराब लिए बिना शारीरिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कार्य करने में अक्षम हो;

ii) जो सामाजिक या सांस्कृतिक दृष्टि से स्वीकृत स्तर से अधिक नशीली दवा या शराब का सेवन करे और उसे सही स्थान तथा सही समय का भी ध्यान न रहे; और

iii) जिसे इस व्यसन के कारण अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, कार्य संबंधी और सामाजिक जीवन में हानिकारक परिणामों को भुगतना पड़े।

विचित्र बात यह है कि इस व्यसन का प्रभाव कुछ ही लोगों पर पड़ता है, जो शराब या नशीली दवा का सेवन करते हैं सभी पर नहीं। अधिकांश देशों में इसे व्यतिक्रम माना जाता है। शराब और दवाओं की लत क्यों पड़ती है, इस बात को समझना आवश्यक है। लेकिन, आइए पहले हम यह जान लें कि शराब और दूसरी नशीली दवाएँ हैं क्या।

15.3 महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं की परिभाषा

नीचे दिए उपभागों में हम (नशीली) दवाओं के उपभोग, गलत दुरुपयोग, व्यसन, लत, सहन-शक्ति, निर्भरता आदि महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं की परिभाषाओं पर विचार करेंगे।

15.3.1 नशीली दवा किसे कहते हैं?

कोई भी ऐसा पदार्थ (सामान्य रूप से रासायनिक) जिसे खाने या लेने से हमारा शरीर या हमारे मनोभाव प्रभावित हों, उसे नशीली दवा कह सकते हैं। यानी यह एक रासायनिक पदार्थ है, जिसे लेने से शरीर में ऐसा परिवर्तन होता है कि शरीर के कार्य करने और मस्तिष्क का विचार करने का ढंग बदल जाता है। ये पदार्थ औषधि के रूप में हो सकते हैं, जिसे डॉक्टर नींद न आने, सिरदर्द, तनाव आदि मामूली बीमारियों के इलाज के लिए देता है, लेकिन यदि इनका इस्तेमाल (1) डॉक्टरी परामर्श के बिना; (2) बहुत लंबे समय तक; (3) इलाज के अलावा दूसरे प्रयोजनों के लिए किया जाए तो यह हानिकारक होता है। ऐसे मादक प्रव्यों का उपयोग सामान्यत: वैध होता है।

कुछ नशीली दवाएँ स्वभावत: औषधि के रूप में प्रयुक्त नहीं होती जैसे – हेरोइन। इनका उपयोग ग़ैर-कानूनी है। दूसरे वर्ग की दवाओं का उपयोग कानूनन किया जा सकता है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति उन्हें अधिक मात्रा में, नियमित रूप से ले तो उसके लिए हानिकारक होती है, जैसे शराब। कुछ ऐसे भी पदार्थ हैं जैसे सिगरेट, कॉफी, चाय आदि, जिन्हें हम सामाजिक रूप से स्वीकृत विधि-सम्मत मादक द्रव्य कह सकते हैं। इन्हें हानिकारक नहीं माना जाता। शराब, हेरोइन, ब्राउन शुगर आदि कुछ नशीली दवाएँ ख़तरनाक हैं जिनके सेवन से इनकी लत लग जाती है। अगले उपभाग में इन्हीं नशीली दवाओं के बारे में विचार किया जाएगा।

15.3.2 नशीली दवाओं का सही और गलत उपयोग

किसी मरीज़ के इलाज या किसी रोग की रोकथाम अथवा किसी रोगी के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए औषधि के इस्तेमाल को नशीली, दवा का ''सही उपयोग'' कह सकते हैं। (औषधि के रूप में या औषधि से इतर रूप में) मात्रा, क्षमता या आवृत्ति की दृष्टि से दवाओं के इस प्रकार के उपयोग को दुरुपयोग कह सकते हैं जिससे व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक कार्य-क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता हो। इसका मतलब यह है कि अगर कोई व्यक्ति अधिक मात्रा में, बार-बार, काफी लंबे समय तक गलत प्रयोजन से, गलत संयोजनों में इन मादक द्रव्यों का सेवन करे तो उसे इनका ''दुरुपयोग'' कहा जाएगा।

15.3.3 लत, सहनशक्ति और निर्भरता

नशीली दवाओं के इस प्रकार के गलत उपयोग से उनकी लत पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में मादक द्रव्य/शराब के बिना व्यक्ति नियमित रूप से अपने रोज़मर्रा के कार्यकलाप नहीं कर पाता। इसके कारण कारण सहनशक्ति कम और नशीली दवा पर निर्भरता हो जाती है और इस दवा

का प्रयोग बंद कर देने पर निवर्तन लक्षण (withdrawal symptoms) प्रकट होने लगते हैं। मोटे तौर पर कह सकते हैं कि सहनशक्ति का मतलब है पहले की तरह वैसे ही प्रभाव पैदा करने के लिए और अधिक मात्रा में तथा बार-बार नशीली दवा का लेना। निर्भरता शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार की हो सकती है। शारीरिक निर्भरता से अभिप्राय है कि यह दवा लिए बिना शरीर रोज़मर्रा के कार्यकलाप नहीं कर पाता। मनोवैज्ञानिक निर्भरता का मतलब यह है कि वह व्यक्ति निरंतर उस दवा और उसे लेने के बारे में सोचता रहता है और उसे पाने का प्रयास करता रहता है। वह इसके बिना मानसिक दृष्टि से और भावनात्मक रूप से नियमित जीवन बिताने में असमर्थ हो जाता है। चरस-गांजा जैसी कुछ नशीले पदार्थों में केवल मनोवैज्ञानिक निर्भरता पैदा होती है, जबकि अफीम और हेरोइन जैसी मादक द्रव्यों में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार की निर्भरता पैदा होती है।

इन दवाओं पर निर्भर हो जाने के बाद यदि अकस्मात् दवा का सेवन रोक दिया जाए तो निवर्तन के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसमें अलग-अलग दवा के अनुसार थोड़ी-बहुत बेचैनी से लेकर बहुत अधिक उल्टियाँ आने और ऐंठन आदि के लक्षण प्रकट हो सकते हैं। आवश्यक नहीं कि नशीली दवा से सभी व्यसनियों में वैसे ही कष्टदायक निवर्तन लक्षण दिखाई दें जैसे दूरदर्शन के धारावाहिकों या फिल्मों में दिखाए जाते हैं। इन लक्षणों की गंभीरता नीचे दी गई बातों पर निर्भर करती है :

i) वह किस प्रकार की नशीली दवा का आदी है;

ii) वह नियमित रूप से उस दवा की कितनी मात्रा लेता है; और

iii) नशीली दवा लेने की अवधि और ऐसी विशेष चिकित्सा इकाइयों में किया जाने वाला उपचार, जहाँ सामान्य रूप से इस प्रकार के निवर्तन की व्यवस्था की जाती हो।

इन दवाओं से निवर्तन में व्यक्ति की मदद को निर्विषीकरण (detorification) कहते हैं। वह डॉक्टरों की देख-रेख में होता है। इसके द्वारा नशा करने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे लत से छुटकारा पा जाता है।

इस बात का ध्यान रहे कि निवर्तन के लक्षणों के कारण नशीली दवा को छोड़ना बहुत अधिक कठिन हो जाता है क्योंकि निवर्तन के लक्षण बहुत ही कष्टदायक होते हैं। इसलिए व्यसनी नशीली दवा के सेवन को छोड़ने से घबराता है, भले ही उसे जीवन पर इस दवा से होने वाले हानिकारक प्रभावों का पता क्यों न हो।

सोचिए और करिए 1

यदि संभव हो तो ऐसा कोई टी.वी. सीरियल या फिल्म देखिए जिसमें नशीली दवाओं के निवर्तन के लक्षण दिखाए गए हों।

15.4 एल्कोहल से संबंधित तथ्य

एल्कोहल कई तरह का होता है। केवल एक तरह के एल्कोहल को ही पिया जा सकता है। इसे ईथाइल एल्कोहल कहते हैं। इसका प्रयोग बियर, शराब, ताड़ी, व्हिस्की, ब्रांडी, रम, अरक या देशी शराब बनाने में किया जाता है। एल्कोहल रक्त प्रवाह में मिलने के बाद सारे शरीर में फैल जाता है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि एल्कोहल कितनी मात्रा में ली गई है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि शराब पीने वाला व्यक्ति कितनी जल्दी जल्दी या धीरे-धीरे शराब पीता है। पीने वाले का वज़न और पेट में खाने की मात्रा कितनी पड़ी है, इससे भी अंतर पड़ता है। शराब में एल्कोहल का प्रतिशत और कुछ हद तक कुछ

मनोवैज्ञानिक कारणों का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे – वह किसके साथ शराब पी रहा है, यह भी महत्त्वपूर्ण है। वह कितने समय से शराब पी रहा है और पीने के बारे में उसका रवैया क्या है, ये बातें भी महत्त्वपूर्ण हैं। एल्कोहल का असर सीधे दिमाग पर होता है। इससे दिमाग और सुषुम्ना (रीढ़ की) की क्रियाशीलता मंद पड़ जाती है। यह एक अवसादक के रूप में कार्य करता है यानी इससे शारीरिक अनुक्रियाएँ मंद पड़ जाती हैं। इस संबंध में एक गलत धारणा यह भी है कि यह उत्तेजक का काम करता है क्योंकि इससे झिझक समाप्त हो जाती है और पीने वाला अधिक प्रसन्नचित्त हो जाता है। सामान्य धारणाओं के विपरीत, एल्कोहल में कैलोरी बिल्कुल नहीं होती और न ही उसमें किसी प्रकार के पोषक तत्त्व होते हैं।

बहुत से लोगों में एल्कोहल के कारण परावलंबन की भावना पैदा हो जाती है। इसके कारण व्यावसायिक और पारिवारिक जीवन में घोर कठिनाई पैदा हो जाती है। वित्तीय क्षेत्रों में, सामाजिक मेल-जोल में तथा पीने वाले और उसके परिवारजनों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ भी बड़ी हो जाती हैं।

कम मात्रा में एल्कोहल (शराब) पीने का अल्पकालीन प्रभाव यह होता है कि पीने वाले व्यक्ति की झिझक कम हो जाती है। उसे गुस्सा अधिक आता है, वह कड़वे अनुभवों को भूल जाता है और उसे हल्कापन महसूस होता है। नियमित रूप से, बहुत अधिक और असंगत ढंग से शराब पीने से चिड़चिड़ापन आ जाता है और निर्णय लेने की शक्ति समाप्त हो जाती है। शारीरिक कार्यकलापों पर उसका नियंत्रण नहीं रहता और सतर्कता समाप्त हो जाती है। इसके कारण स्पष्ट रूप से बोलने, निर्णय ले सकने में बाधा पड़ती है तथा लंबी बीमारी तथा मृत्यु भी हो सकती है।

15.5 नशीली दवाओं से संबंधित तथ्य

नशीली दवा एक ऐसा पदार्थ है जो भावनाओं, सोचने की शक्ति या व्यवहार को प्रभावित करता है। मस्तिष्क में रासायनिक प्रतिक्रिया के प्रभाव से ऐसा होता है। इस दृष्टि से शराब भी एक नशीली दवा है। इन दवाओं का सेवन उन्हें खाकर, सूँघकर, नस्वार लेकर, पीकर, सिगरेट या चिलम में धुएँ के माध्यम से या इंजेक्शन लगाकर किया जाता है। शराब या एल्कोहल को छोड़कर अन्य दवाओं को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

i) उद्दीपक दवाएँ (Stimulants) : ऐसी दवाएँ जिनके सेवन से मस्तिष्क की क्रियाशीलता बढ़ जाती हो।

ii) अवसादक दवाएँ (Depressants) : ऐसी दवाएँ जो मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम करती है।

iii) विभ्रांतिकारक (Hallucinogens) दवाएँ : ऐसी दवाएँ जो हमारे देखने, सुनने और अनुभव करने के ढंग को बदल देती हैं।

iv) गांजा, हशिश, चरस, भांग आदि नशीली दवाएँ (Cannabis) जो भांग के पौध से तैयार की जाती हैं।

v) स्वापक दवाएँ (Opiates) : अफ़ीम से बनाई जाने वाली नशीली दवाएँ या ऐसी कृत्रिम तौर पर तैयार की गई दवाएँ जो अफ़ीम जैसे प्रभाव पैदा करती हैं।

15.5.1 उद्दीपक दवाएँ

इन उद्दीपक दवाओं को आम तौर पर ''अपर्स'' (uppers) ''पेप पिल्स'' या ''स्पीड'' के रूप में जाना जाता है क्योंकि इनसे उत्तेजना या उल्लास की अनुभूति होती है। इस वर्ग में सबसे

अधिक प्रचलित दवा 'एम्फीटेमाइन' है। इनका उपयोग अधिकतर विद्यार्थी या खिलाड़ी करते हैं। इससे उनमें अस्थायी रूप से स्फूर्ति आ जाती है। इससे उनके अंदर पढ़ने या खेलने की तात्कालिक अतिरिक्त शक्ति आ जाती है और वे काफी अधिक समय तक पढ़ या खेल सकते हैं। शरीर इस दवा की काफी मात्रा ले सकता है और उसे सहन कर सकता है। उद्दीपक दवाओं को प्राय: निगल लिया जाता है। कोकेन सबसे खतरनाक उद्दीपक दवा है। दक्षिणी अमेरिका में इसे कोक पौधे से तैयार किया जाता है। कोकेन का कश नाक से लिया जाता है। कोकेन का एक और रूप ''क्रैक'' है। अब हेरोइन पश्चिमी देशों में अधिकाधिक प्रचलित होती जा रही है। शारीरिक रूप से कोकेन व्यसनकारी नहीं है लेकिन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह बहुत अधिक व्यसनकारी है। चिंता, अवसाद और बेहोशी आदि इसके कुछ प्रभाव हैं। इससे कुछ दीर्घकालिक लक्षण हैं – शरीर का वज़न कम होना, भय की भावना घर कर जाना, नींद न आना और बेचैनी आदि।

15.5.2 अवसादक दवाएँ

अवसादक दवाओं को आम तौर पर डाउनर्स (downers) कहा जाता है। शामक और अवसादक दवाएँ इसी वर्ग में आती हैं क्योंकि इनके सेवन से हल्कापन और शांति का अनुभव होता है। ये गोलियों के रूप में मिलती हैं। जैसे – मैंड्रैक्स, वेलियम और लिब्रियम आदि। एल्कोहल (शराब) भी इसी श्रेणी में आती है। शराब को कुछ लोग इन गोलियों के साथ मिलाकर लेते हैं, जो बहुत ही खतरनाक हो जाती है। इससे कभी-कभी मृत्यु तक हो सकती है। एक अन्य प्रकार की अवसादक दवा गोलियों के रूप में मिलती है। इन गोलियों में बार्बीटुरेट नामक रसायन होते हैं जो अक्सर नींद की गोलियों में पाए जाते हैं। ये शामक दवाओं से अधिक तेज होते हैं और प्राय: इनकी आदत पड़ जाती है। अधिक मात्रा में लेने से इनसे मृत्यु तक हो जाती है। डॉक्टर की देख-रेख बिना इन दवाओं का सेवन अचानक बंद करना बड़ा खतरनाक सिद्ध होता है।

15.5.3 विभ्रांतिकारक दवाएँ

इन दवाओं को आम तौर पर चेतना प्रसारी (psychedelic) दवाएँ कहा जाता है। इन दवाओं के प्रयोग से व्यक्ति चीज़ों को अत्यधिक व्यापक रूप में और भिन्न रूप में देख-सुन सकता है। विशिष्ट प्रकार की संगति का इन दवाओं से होने वाले प्रभाव पर गहरा असर पड़ता है। इनसे एक तो तीव्र मनोवेगों का अनुभव होता है, मानसिक संवेदनों को तीव्र किया जा सकता है और उनके इस्तेमाल से समय, स्थान और पहचान का बोध समाप्त हो सकता है। इन दवाओं में एल. एस.डी. (Lysergic Acid, Diethylamide) या 'एसिड' सबसे अधिक प्रचलित हैं। इसका प्रभाव जिसे ''ट्रिप'' भी कहते हैं, का असर कई दिन तक बना रहता है। इसके बहुत ही कम मात्रा के उपयोग से भी ऐसा अनुभव होने लगता है जैसे बहुत ऊँचाई पर हों। यदि इस ''स्पीड'' (Amphetamine) के साथ मिलकर लिया जाए, तो यह बहुत ही खतरनाक ''ट्रिप'' बन जाता है। अगर इसे सही मार्गदर्शन के बिना लिया जाए तो यह खतरनाक भी हो सकती है और इससे मृत्यु हो सकती है। भारत में पाए जाने वाले धतूरे का एल.एस.डी. से भी अधिक तेज़ होता है जिससे कभी-कभी मानसिक अस्थिरता पैदा हो जाती है। धतूरे के सूखे पत्तों का धूम्रपान किया जा सकता है और इसके पत्ते, जड़ और बीजों के अर्क या रस को खाया या पिया जा सकता है।

15.5.4 गांजा, भांग आदि

इस वर्ग में गांजा, हशिश (चरस) और भांग आते हैं। ये सब भंग के पौधे के विभिन्न भागों से बनाए जाते हैं। इन नशीली दवाओं का उपयोग विश्व में सबसे अधिक होता है। गांजा, जिसे ग्रास, पॉट ज्वॉइंट, वीड, मारिजुआना, रीफ़र तथा डोप आदि भी कहते हैं, को सिगरेट के साथ पिया जाता है। चरस की काली-काली गोलियाँ बनाकर उन्हें सिगरेट में भरकर या खाने के साथ खाया जाता है। आम तौर पर भांग को भी सिगरेट की तरह या चिलम में रखकर या ठंडाई में पीसकर पिया जाता है, तथा इसे पीसकर भी खाया जाता है।

गांजे या भांग को सिगरेट की तरह पीने का तत्कालीन प्रभाव यह होता है कि इससे हल्कापन महसूस होता है और इससे अधिक गहराई से अनुभव करने या देखने की प्रवृत्ति होती है। इसके सेवन से उस समय विद्यमान मनोवेग अधिक बढ़ जाते हैं और झिझक कम हो जाती है। इसके कारण समय या गति का बोध एकदम बदल जाता है। इसके सेवन से ऐसे कार्यों को करने की क्षमता नष्ट हो जाती है जिनमें ध्यान लगाने, तेज़ी से कार्रवाई करने और समन्वय की आवश्यकता होती है। इसके कारण व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से इस दवा पर निर्भर हो जाता है। इसके सेवन का सबसे ख़तरा यह है कि इसको लेने के कुछ समय बाद और अधिक तेज या प्रभावकारी दवा लेने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।

15.5.5 स्वापक (नींद लाने वाली) दवाएँ

स्वापक दवाएँ मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं। इनमें से एक तो अफीम ही है, दूसरी दवाएँ हेरोइन और मॉर्फीन हैं। ये सभी पोस्त के पौधे से बनती हैं। कुछ स्वापक दवाएँ प्राकृतिक रूप से उपलब्ध होती हैं तो कुछ प्रयोगशाला में तैयार की जाती हैं। भारत के गाँवों में लोग आम तौर पर अफ़ीम का सेवन करते हैं। इसका कभी-कभार इस्तेमाल करने से कोई सामाजिक समस्या खड़ी नहीं होती। लेकिन बहुत से लोग इन दवाओं के आदी हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे शारीरिक और मानसिक रूप से इन पर निर्भर हो जाते हैं।

मॉर्फीन का इस्तेमाल दर्दनाशक के रूप में किया जाता है। इसके सेवन से इसकी जबर्दस्त लत लग जाती है। हेरोइन मॉर्फीन से निर्मित प्रयोगशाला में तैयार की गई सबसे अधिक विनाशकारी नशीली दवा है। इसका सेवन सबसे अधिक प्रचलित है। हेरोइन, मॉर्फीन से भी कई गुना तेज शक्तिशाली दवा है। इसका सेवन सबसे अधिक होता है इसकी लत भी बहुत जल्दी लगती है। शुद्ध हेरोइन बहुत महँगी होती है इसलिए हेरोइन की ''ब्राउन शुगर'', ''स्मैक'' या ''गर्ड'' आदि अपरिष्कृत किस्मों का बहुत अधिक प्रचलन है। इस नशीले पदार्थों की मूल कीमत बहुत कम होती है, इसलिए ग़रीब लोग इन्हें आसानी से खरीद सकते हैं। इसके धूम्रपान से या इंजेक्शन द्वारा लिया जा सकता है। इसके सेवन का एक और भी तरीका प्रचलित है – इसे किसी चम्मच या चाँदी के वक्र पर रखकर नीचे से गर्म किया जाता है और इससे जो धुआँ निकलता है, उसको मुँह से अंदर लिया जाता है। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह बहुत अधिक व्यसनकारी दवा है। आजकल भारत में इन नशीली दवाओं का सबसे अधिक गलत इस्तेमाल होता है।

उपर्युक्त नशीली दवाओं के अलावा भी कुछ अन्य स्वापक दवाएँ हैं। ये हैं – ''मीथेडोन'' और ''पैथिडीन''। पश्चिमी देशों में जिनको हेरोइन जैसी बहुत तेज दवाओं की लत होती है, उनकी लत छुड़ाने के लिए हेरोइन के स्थान पर कम तेज ''मीथेडोन'' का इस्तेमाल किया जाता है।

कोष्ठक 15.01

नेटवक्र प्रतिचयन तकनीक द्वारा मध्य प्रदेश के सागर विश्वविद्यालय परिसर के चार हज़ार शहरी विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया। इनमें एक सामान्य बात यह पाई गई कि सभी को मन: प्रभावी नशीली दवाएँ लेने की आदत थी। इस संदर्भ में दो प्रारूप विज्ञानी अध्ययन किए गए। इनमें पहला ''निर्भरता प्ररूप विज्ञान'' से संबंधित था। इस अध्ययन में नशीली दवाओं का इस्तेमाल कितनी बार किया जाता है, इसे आधार माना गया था। दूसरा अध्ययन ''सातत्य प्ररूप विज्ञान'' से संबंधित था, जो इस्तेमाल की अवधि पर आधारित था।

यह देखा गया कि नशीली दवाओं का सेवन करने वाले अधिकांश लोग शहरी थे जिनकी औसत आयु 23.72 साल थी। इनमें अधिकांश हिंदू परिवारों के थे। इनमें अधिकांश विद्यार्थी, नौकरीपेशा कृषक वर्ग या व्यापारी वर्ग से संबंधित थे। आर्थिक दृष्टि से वे सम्पन्न थे। इनमें से 80 प्रतिशत छात्र बड़ी कक्षाओं के थे, जो स्नातक या डॉक्टरेट के लिए अध्ययन कर रहे

थे और शेष छात्र प्रौद्योगिकी संकाय से थे। बाकी विद्यार्थी ग़ैर-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में पढ़ रहे थे। ज़्यादातर छात्र शराब और तंबाकू का सेवन करते थे। गांजा, भांग और अन्य नशीली दवाओं के सेवन भी किया जाता था। अनेक छात्र कई तरह की दवाओं का भी सेवन करते थे। जिन छात्रों के नमूने के लिए गए, उनमें 46.7 प्रतिशत छात्र शराब और तंबाकू का सेवन करते थे। इनमें से 67.7 प्रतिशत छात्र कभी-कभी नशीली दवा लेते थे, जबकि एक-तिहाई से कुछ कम छात्र ऐसे थे, जो नियमित रूप से सेवन करते थे।

स्वापक दवाओं के सेवन करने वालों में जीवाणुयुक्त या इंजेक्शन की गंदी सुइयों के इस्तेमाल से, गंदे पानी के संक्रमण से और गलत ढंग से इंजेक्शन लगाने से कई अन्य प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी उठ खड़ी होती हैं। इसके अलावा, स्वापक दवा लेने वालों में एक खास बात यह भी होती है कि वे कुपोषण, अपने प्रति लापरवाही के भी शिकार होते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) दवाओं का गलत उपयोग क्या होता है? इसमें और दवा की लत में क्या अंतर है? आठ पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) दवाएँ कितने प्रकार की होती हैं, बताएँ। आठ-नौ पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

15.6 लत लगने की प्रक्रिया

आज साधारणतया यह बात स्वीकार की जाती है कि दवा की लत एक रोग है, इसे केवल चारित्रिक कमज़ोरी या इच्छाशक्ति का अभाव नहीं कहा जा सकता। इस भाग में शराब (एल्कोहल) और नशीली दवाओं का व्यसन लगने की प्रक्रिया की अलग-अलग जाँच की गई है।

15.6.1 शराब की लत

अत्यधिक मद्यपान की लत को पुरानी बीमारी कहा जाता है। शराबी व्यक्ति थोड़ी-थोड़ी देर बाद शराब का सेवन करता है और वह इस हद तक पीता है कि (1) वह समुदाय के सामान्य व्यवहार और सामाजिक मर्यादाओं की सीमा को लांघ जाता है, और (2) स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पड़ता है, जिसका प्रभाव उसकी सामाजिक अथवा आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। फलस्वरूप उसे नई-नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

जिस व्यक्ति को शराब की लत लग जाती है, उसका ध्यान इन समस्याओं की ओर नहीं जाता पर यदि उसे इनका पता चल भी जाए तो भी वह पीने की आदत को पूरी तरह नहीं छोड़ पाता।

अतिमद्यपता (अंधाधुंध शराब पीने) का विवरण नीचे दिया गया है :

i) अतिमद्यपता एक रोग है। यह किसी मनोवैज्ञानिक समस्या का लक्षण नहीं है। इस रोग के कारण ही मनोवैज्ञानिक और शारीरिक समस्याएँ पैदा होती हैं। इनका समाधान अतिमद्यपता के उपचार द्वारा ही संभव है।

ii) यह ऐसा रोग है, जो उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। यानी अगर इसका उपचार न किया जाए तो यह गंभीर रूप धारण कर लेता है।

iii) यह रोग घातक सिद्ध हो सकता है। अगर इसका उपचार न किया जाए तो यह गंभीर रूप धारण कर लेता है।

iv) इस रोग का उपचार हो सकता है। सही उपचार से इस बीमारी को नियंत्रित या आगे बढ़ने से रोका जा सकता है। इसका अंतिम लक्ष्य रोगी को शराब की लत से पूर्ण रूप से मुक्त कराना है। इस प्रकार पियक्कड़ व्यक्ति न तो यदा-कदा पीता है और न ही वह समाज में बैठकर सभ्य रूप से पी सकता है। यह बात उन लोगों के बारे में भी उतनी ही सही है, जिन्होंने सालों तक शराब को हाथ भी नहीं लगाया होता। चाहे वह थोड़ी मात्रा में ही शराब क्यों न पिए, वह फिर बार-बार पीना शुरू कर सकता है।

एक प्रगामी रोग के रूप में यह कई अवस्थाओं में से गुज़रता है। इन अवस्थाओं के लक्षणों का वर्णन नीचे दिया गया है।

15.6.1.1 आरंभिक अवस्था

क) पहले की तरह नशा पाने के लिए उसे और अधिक शराब की जरूरत होती है।

ख) अपराध बोध के कारण वह व्यक्ति शराब के बारे में चर्चा नहीं करना चाहता।

ग) ''निश्चेतनता की स्थिति'' यानी शराब के नशे के दौरान उसने जो कुछ भी किया होता है, उसे वह भूल जाता है।

घ) उसे केवल पीने की चिंता होती है, यानी वह यही सोचता रहता है, कि कैसे, कब और कहाँ उसे फिर शराब पीने का अवसर मिलेगा।

15.6.1.2 मध्य अवस्था

क) उसका शराब की मात्रा, समय और स्थान पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

ख) दूसरों को और स्वयं को शराब पीने के बारे में सफाई देना।

ग) शान जताना यानी अपनी हैसियत से ज़्यादा करके दिखाना, जैसे – शान दिखाने के लिए खूब पैसा ख़र्च करना।

घ) बातचीत में गाली-गलौज और मारपीट पर उतर आना।

ङ) अपराध बोध होना और उसके लिए पछताना।

च) कुछ समय के लिए अस्थायी तौर पर मद्यपान छोड़ देना।

छ) शराब पीने में कमी करने के लिए शराब पीने के तरीकों को बदल देना यानी शराब की किस्म या ब्रांड को बदल देना। पीने के स्थान और समय को बदल देना आदि। लेकिन इनसे कोई कोई ठोस परिणाम नहीं निकलता।

ज) इससे सामाजिक संबंधों में समस्याएँ आ जाती हैं। इसके साथ ही परिवार, व्यवसाय और वित्तीय समस्याएँ बढ़ जाती हैं।

झ) कभी-कभी सुबह उठते ही शराब पीने लगना, ताकि पूर्व संध्या में बहुत अधिक शराब पीने के कारण जो अस्वस्थता और अरुचिकर शारीरिक लक्षण प्रकट हुए थे, उन पर नियंत्रण पाया जा सके।

ट) कभी-कभी पियक्कड़ शराब की लत से उबरने के लिए दूसरों से सहायता भी माँग सकता है।

15.6.1.3 स्थायी अवस्था

क) सहनशक्ति में कमी आ जाती है यानी अब उसे थोड़ी सी मात्रा में शराब पीने से भी नशा हो जाता है।

ख) शारीरिक समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं।

ग) अंधाधुंध पीना यानी कि कई दिन तक लगातार पीते रहना।

घ) अपनी रोज़मर्रा के शराब के कोटे का ख्याल रखना कि कहीं वह शराब पिये बिना न रह जाए।

ङ) शराब पाने के लिए आपराधिक आचरण और नैतिक दृष्टि से गिर जाना, यानी सामाजिक मूल्यों के अनुसार जीने में असमर्थ होना।

च) मन में ऐसा संदेह होना कि हर व्यक्ति उसके खिलाफ़ है।

छ) पुरुषों में यौन इच्छा या यौन व्यवहार समाप्त हो जाता है। इसके कारण उसे अपनी पत्नी की वफादारी पर संदेह होने लगता है।

ज) मामूली बातों से भयभीत होना, जैसे अकेलापन।

झ) अपने शरीर के काम, चलने-फिरने वाले अंगों पर नियंत्रण खत्म हो जाना, यानी हिलने और काँपने के कारण वह मामूली से काम भी नहीं कर पाता।

ट) उसे विभ्रांति का अनुभव होता है यानी उसे ऐसा लगता है कि कहीं से आवाज़ आ रही है। वह ऐसी चीज़ें देखता है, जो वहाँ होती नहीं और बाहरी उद्दीपकों के अभाव में उसे कई प्रकार के संवेदनों का अनुभव होता है।

ठ) यह यदि शराब पीना बंद कर दे, तो उसे भयंकर शारीरिक बेचैनी और दर्द होता है।

ड) अंतिम अवस्था में या उसकी मृत्यु हो जाती है या फिर वह मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है।

15.6.2 नशीली दवाओं की लत

नशीली दवाओं के लक्षण भी शराब की ही तरह के होते हैं। इस दवाओं के व्यसन की अवस्थाएँ भी शराब की लत की अवस्थाओं के समान ही हैं, जिनका विवरण आगे दिया गया है :

15.6.2.1 आरंभिक अवस्था

क) नशीली दवा की मात्रा और इसको लेने की आवृत्ति बढ़ जाती है। यानी वह पहले दो बार नशीली दवा लेता था तो अब तीन-चार बार लेने लगता है।

ख) वह व्यक्ति नशीली दवाओं पर ज़्यादा समय और पैसा खर्च करने लगता है तथा जीवन की दूसरी गतिविधियों पर कम समय लगाता है।

ग) वह हमेशा नशीली दवाओं के बारे में ही सोचता रहता है और उन्हें पाने की आवश्यकता उसके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

15.6.2.2 मध्य अवस्था

क) अपने आपको स्वस्थ अनुभव करने के लिए उसे नशीली दवा की पहले की अपेक्षा ज़्यादा मात्रा की जरूरत होती है यानी उसे दवा की लत लग जाती है।

ख) इस दवा के प्रयोग को बंद करने या कम करने का बार-बार प्रयास करने या निर्णय करने के बावजूद उसका दवा के सेवन पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

ग) वह उस दवा को छिपाकर रखने लगता है।

घ) शिक्षा, कामकाज, परिवार आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में नई-नई समस्याएँ आने लगती हैं।

ङ) वह अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करने लगता है।

च) अपने मित्रों और पहले वाले रुचि के क्षेत्र से दूर रहने लगता है।

छ) व्यक्तित्व में परिवर्तन आ जाता है।

15.6.2.3 स्थायी अवस्था

क) नशीली दवाओं के सेवन पर नियंत्रण करना पूरी तरह समाप्त हो जाता है।

ख) वह लगभग सदा नशे में रहता है।

ग) उसे अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरों की मदद की ज़रूरत होती है जैसे, भोजन आदि।

घ) वह नशीली दवा का सेवन करने वाले अन्य लोगों के साथ ही रहता है।

ङ) उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो सकती है।

इस प्रकार नशीली दवाओं की लत के कारण उसके व्यवहार, सामाजिक जीवन तथा निर्णय करने, सोचने-समझने की शक्ति में कमी आने लगती है।

15.7 लत के कारण

किसी चीज़ की लत क्यों लगती है, यह एक बहुत ही जटिल प्रश्न है। अनुसंधान से यह पता चलता है कि लत लगने का कोई एक कारण नहीं होता अपितु इसके विविध कारण हो सकते हैं।

पहले यह विश्वास किया जाता था कि विशिष्ट प्रकार के लोग ही लत के शिकार होते हैं। लेकिन ऐसा कोई नियत व्यक्तित्व नहीं है, जिस लत लगने की संभावना होती हो। कुछ ऐसे तत्त्व हो सकते हैं, जिनसे किसी व्यसन या लत के विकसित होने के लिए अनुकूल वातावरण बन जाता हो। कुछ ऐसे तत्त्व भी हो सकते हैं, जिनके कारण किसी लत को छोड़ना कठिन हो जाता हो। इसके बारे में आगे के उपभागों में विचार किया जाएगा।

15.7.1 शारीरिक कारण

यह देखा गया है कि अगर बच्चों के माता-पिता दोनों को किसी चीज़ की लत हो, तो बच्चे में उसे व्यसन लगने की संभावना अधिक होती है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि सभी व्यसनी माता-पिताओं के बच्चे भी व्यसनी ही होंगे। खासकर परिवार के बच्चों में शराब पीने की लत पड़ सकती है। इससे यह संकेत मिलता है कि व्यसनी होने की प्रवृत्ति वंशगत होती है। फिर भी इस समस्या की वृद्धि के लिए अन्य बातें भी जिम्मेदार हो सकती हैं, जैसे :

i) नशीली दवा की कितनी मात्रा और कितनी बार ली जाती है।

ii) वह दवा कैसे ली जाती है? (इंजेक्शन द्वारा ली जाने वाली दवाइयाँ अधिक व्यसनकारी होती हैं।)

iii) उपलब्धता, पहुँच और कीमत।

iv) पारिवारिक प्रभाव के अलावा उस व्यक्ति के वातावरण के अन्य प्रभावी कारणों की मौजूदगी। ऐसा विश्वास किया जाता है कि शराब की लत को विकसित करने में कई अन्य शारीरिक कारकों का भी योगदान होता है, जैसे – अतिमद्यपता में शोषण की कमी, विभिन्न शारीरिक तंत्रों का ठीक से कार्य न करना। उदाहरण के लिए, अंत:स्रांवित-तंत्र आदि। लेकिन इनमें से कोई भी बात निश्चयात्मक रूप से सिद्ध नहीं हुई है।

15.7.2 व्यक्तिगत या मनोवैज्ञानिक कारण

वर्षों से नशीली दवा की लत को व्यक्तिगत समस्याओं के कारण होने वाली मानसिक विकास माना जाता रहा है। अध्ययनों से यह पता चलता है कि असुरक्षित लोगों को व्यसन लगता है। बहुत से व्यसनियों में हल्की से तेज मानसिक परेशानियों के लक्षण देखे गए हैं, यद्यपि अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ कि मानसिक समस्याओं के कारण लत लगती है, या लत से मानसिक समस्याएँ पैदा होती है पर इनमें चाहे कोई भी संबंध हो, इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि नशीली दवाओं के व्यसनी व्यक्ति व्यक्तित्व की गंभीर समस्याओं, अपूर्णता की भावना, पर निर्भरता, लाचारी, अलगाव और स्वाभिमान की कमी से ग्रस्त होते हैं। लत लगने से पूर्व उनमें तथा बचपन से संबंधित समस्याओं के तनाव के लक्षण भी मिलते हैं।

यह भी कहा जाता है कि दवाओं की लत शिक्षा का परिणाम है। पहले-पहले नशीली दवा के सेवन के बाद आनंद की अनुभूति होती है। उसे प्रतिफल समझ कर वह दवा की मात्रा निरंतर बढ़ाता जाता है। इस प्रकार यदि आरंभिक अनुभव आनंददायक हो तो दवा की लत लग जाती है। लेकिन सामान्य रूप से यह सिद्धांत मान्य है कि दूसरों की अपेक्षा कुछ व्यक्तियों में व्यसन की प्रवृत्ति अधिक होती है।

15.7.3 सामाजिक-सांस्कृतिक/परिवेश संबंधी कारण

आज बहुत से ऐसे सिद्धांत प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनमें यह दावा किया गया है कि नशे की लत का मूल कारण सामाजिक-सांस्कृतिक है। जिन समाजों में लोग नशीली दवाओं और/अथवा शराब के पीने को बुरा नहीं मानते और जहाँ नशीली दवाएँ सस्ती और सुलभ होती हैं, वहाँ

नशीली दवाओं/ शराब की खपत ज़्यादा होती है। कुछ जनजातीय समाजों में शराब का उपयोग धार्मिक कर्मकांडों और संस्कारों का भाग होता है। इस प्रकार नियमित सेवन से यह स्वाभाविक है कि कुछ लोगों को इनकी लत लग जाए। इसका मतलब यह नहीं है कि केवल समाज द्वारा मान्यता और सुलभता से इनकी लत को प्रोत्साहन मिलता है। कुछ समाजों में जहाँ इनके सेवन को हेय दृष्टि से देखा जाता है वहाँ भी कुछ लोगों को नशे की लत पड़ जाती है। युवक लोग प्राय: समाज में वयस्कों के लिए निर्धारित मानदंडों और मूल्यों के प्रति विद्रोह-भाव लेने लगते हैं। इस प्रकार के सांस्कृतिक विपथन के सिद्धांत से यह संकेत मिलता है कि नशीली दवाओं के विकास का कारण ग़ैर-परंपरागत वर्गों से साथ इन मनोवेगात्मक और सामाजिक संबंधों का होना है।

इसके साथ ही हम समाज के कुछ वर्गों में शराब और हल्की किस्म की दवाओं के सेवन को सामाजिक स्वीकार्यता की बात के साथ जोड़ सकते हैं। भारत में शादी, मृत्यु, उत्सव आदि कुछ धार्मिक और सामाजिक अवसरों पर विशेष रूप से कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक वर्गों में शराब, भांग, गांजा आदि के उपयोग को परंपरागत मान्यता प्राप्त है। आजकल सभी सामाजिक-सांस्कृतिक वर्गों में सामाजिक रूप से शराब पीने में वृद्धि हुई है। अब समाज में मदिरापान को प्रतिष्ठा का सूचक माना जाने लगा है। कुछ पश्चिमी देशों में सामाजिक रूप से शराब पीना और दर्द दूर करने के लिए तथा अपनी कार्य-क्षमता बढ़ाने के लिए गोली लेना आम बात है।

दवाओं के व्यसन के दायरे को निर्धारित करने में नशीले पदार्थों का कानूनी दर्जा भी एक महत्त्वपूर्ण कारक है। चाहे कोई संस्कृति नशीली दवाओं के सेवन को कानूनी और सांस्कृतिक मान्यता होने के कारण दवाओं की लत बढ़ती है। अगर कम नशीली दवाओं को कानूनन मान्यता दे दी जाए तो अधिक नशीली दवाओं के व्यसनियों की संख्या कम हो जाएगी। ऐसा मत रखने वाले लोगों का कहना है, कि सभी दवाओं को एक व्यापक श्रेणी में रखने से नशे की लत को रोकने के प्रयासों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

युवा वर्ग में कुछ सम्पन्न परिवारों के युवक ऐसे होते हैं, जो अपने समकक्ष लोगों के बीच अपनी पहचान बनाने के लिए शराब का सेवन करते हैं। चूँकि शराब पीना मर्दानगी का प्रतीक माना जाता है, ये लड़के छोटी आयु में ही अपने सम्पन्न साथी के प्रभाव में आकर शराब पीना और कभी-कभी नशीली दवाएँ लेना शुरू कर देते हैं।

नशे की लत आयु और सांस्कृतिक पश्ष्ठभूमि की ही भाँति व्यवसाय से भी सम्बद्ध पाई गई है। जो लोग ऐसे धंधों में लगे होते हैं, जहाँ उन्हें शारीरिक और/अथवा मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है, उन्हें भी नशे की लत लग सकती है। जिन लोगों को लत लगने की संभावना होती है, उनका विवरण आगे दिया है :

i) जिन लोगों के व्यवसाय का संबंध अप्रीतिकर कार्यकलापों से होता है, जैसे मल सफाई कर्मियों, अंत्येष्टि कर्म या मुर्दाघर में काम करने वालों, कूड़े से सामान बीनने वाले कबाड़ियों आदि को नशे की लत लग जाती है।

ii) जो लोग बहुत थका देने वाले और उबाऊ काम करते हैं, जैसे ट्रकों के ड्राइवर, रिक्शा-चालक, माल ढोने वाले और कुली आदि इन्हें भी शराब आदि की लत लग जाती है।

iii) विपणन (मार्केटिंग) और विक्रय आदि के स्पर्धी धंधों में लगे ऐसे लोगों को भी शराब आदि की लत लग जाती है, जिनमें बहुत से सौदे शराब के दौर के साथ ही तय होते हैं।

इसके अतिरिक्त परिवेश सम्बन्धी एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक परिवार का प्रभाव है। यदि परिवार में किसी वयस्क व्यक्ति को शराब आदि की लत हो तो परिवार के सदस्य उसकी नकल कर सकते हैं। कुछ अन्य कारक जो प्रभावित करते हैं, निम्नलिखित हैं :

i) संक्रमण काल, जैसे किशोरावस्था, जवानी के समय परिवार द्वारा तनाव में वृद्धि के कारण;

ii) माता-पिता के आवश्यक नियंत्रण के अभाव से; और

iii) परिवार में फूट पड़ने या पारिवारिक व्यवस्था में सामंजस्य होने के कारण।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, प्रभावी सम्पन्न वर्ग द्वारा नशीली दवाओं का गलत सेवन करने और उसे व्यसन लगने की हद तक बढ़ावा देना बहुत निर्णायक है। समाजीकरण द्वारा यह निर्धारित होता है कि लोग किस हद तक व्यापक सामाजिक मानदंडों के अनुसार चलते हैं या वे सामाजिक बंधनों को तोड़कर सामान्य मार्ग से हटकर शराब या नशीली दवाओं के गुलाम बनकर जाते हैं।

विभिन्न संस्कृतियाँ अपने सदस्यों को संतोष प्रदान करने और तनावों से मुक्त दिखाने के लिए भिन्न-भिन्न उपाय करती हैं। यदि किसी संस्कृति में अपने सदस्यों के लिए विशेष रूप से, युवा लोगों के लिए और उन लोगों के लिए जो शारीरिक तथा मानसिक तनाव में जीते हैं, तनाव को दूर करने के लिए खेल, सृजनात्मक कलाएँ, कर्मकाण्ड और संस्कार आदि स्वस्थ उपायों की व्यवस्था हो, तो उनकी शराब या दूसरी नशीली दवाओं की ओर जाने की संभावना कम होती है और उनमें इनकी लत लगने की प्रवृत्ति भी कम होती है।

समाजविज्ञान सिद्धांतवादी इसकी कई अन्य व्याख्याएँ भी करते हैं। जो लोग तनाव के सिद्धांत को मानते हैं, उनके विचार में लोगों का नशीली दवाओं और शराब की ओर झुकाव इसलिए होता है क्योंकि उनके आसपास के वातावरण की सामाजिक परिस्थितियाँ उन्हें सफलता के पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं करतीं। यह बात विशेष रूप से उन वर्गों पर लागू होती है जो सामाजिक दृष्टि से अलाभकरी स्थिति में होते हैं तथा सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से निचले वर्ग में आते हैं।

यह भी विश्वास किया जाता है कि लोग शराब और अन्य नशीली दवाओं का सेवन करते हैं, उनका रहन-सहन का ढंग असामान्य हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी प्रवृत्ति नशीली दवाओं और शराब पर निर्भर होने की हो जाती है तथा यह व्यसन उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बन जाती हैं।

इसलिए यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शराब की लत के पीछे कई सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक कारण होते हैं, जो अमूमन मिल-जुलकर ही इसको जन्म देते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) एक रोग के रूप में अतिमद्यपता के चार अभिलक्षण क्या हैं? लगभग दस पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नशीली दवाओं और शराब आदि की लत डालने में पारिवारिक प्रभाव किस प्रकार से प्रेरक कारण हैं? लगभग नौ पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

15.8 नशीली दवाएँ, अपराध और राजनीति

नशीली दवाओं के व्यसन से न केवल लोगों का स्वास्थ्य ही खराब होता है बल्कि उससे कानून और व्यवस्था तथ राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरा होता है। बृहत्तर समाज पर इसके परिणाम भयंकर होते हैं। अधिकांश देश कानून द्वारा नशीली दवाओं के उत्पादन, खपत और बिक्री को नियमित करते हैं। कानून द्वारा दवाओं के उपयोग को निरुत्साहित किया जाता है या उसके लिए कठोर सजा की व्यवस्था होती है। फिर भी दवा के उत्पादन और बिक्री अवैध व्यापार एक लाभदायक व्यवसाय है। नशीली दवाओं का बड़ा बुरा चस्का लगता है। उनके ग्राहक और अधिक माँग करते हैं। यह बात बिल्कुल स्वाभाविक है कि आपराधिक संगठन ही इन दवाओं के अवैध व्यापार को संचालित करते हैं।

वे इस धंधे को बड़ी बेरहमी से चलाते हैं। अपनी गतिविधियों पर अंकुश लगाने वाले सभी प्रयासों को वे निष्फल कर देते हैं। जब सरकार सख्त कानून बनाती है, तो अवैध धंधा करने वाले लोग अस्थायी तौर पर छिप जाते हैं और सरकारी नीतियों के हानिकारक प्रभावों को समाप्त करने के लिए गुप्त अभियान चलाते हैं। जब दवाओं को संसाधित करने वाली प्रयोगशालाओं का सरकार का पता चलता है और वह उन्हें नष्ट कर देती है, तो वे नई और चलती-फिरती प्रयोगशालाएँ शुरू कर देते हैं। नशीली दवाओं, अपराध और राजनीति में भ्रष्टाचार, घूसखोरी तथा हिंसा कोई नई बात नहीं है। ये लोग अपने काम में रुकावट डालने वालों की हत्या तक करने में नहीं हिचकते।

दवा के सेवन के परिणामस्वरूप होने वाले छोटे-मोटे और गंभीर अपराध आम बात है। नशीली दवा की एक खुराक के इंजेक्शन के लिए नशेड़ी चोरी तक करने में संकोच नहीं करता। वह दूसरे को ठग सकता है, अपना या दूसरे का सामान बेच सकता है। यहाँ तक कि वह किसी की हत्या तक कर सकता है। दवा की लत का यहाँ तक प्रभाव होता है कि व्यक्ति हिंसात्मक अपराध

कर सकता है क्योंकि दवा के प्रयोग से उसके शरीर की रासायनिक स्थिति ऐसी हो जाती है जो उसे उग्र बना देती है। हमें इन दवाओं का अवैध व्यापार कनने वालों की तीव्र भर्त्सना करनी चाहिए। सामान्य रूप से ये छोटे-मोटे फेरी वालों और दवा व्यसनियों को दवा पहुँचाने वालों की आड़ लेकर अपना धंधा चलाते हैं। दवा पहुँचाने वालों को स्वयं भी लत होती है। वे दवाओं के दुरुपयोग के लिए ऐसे लोगों को तलाश में रहते हैं, जिन्हें वे दवा का आदी बना सकें और इस प्रकार अपनी लत की आदत को पूरा करने के साधन जुटा सकें। ये दवा का ग़ैर-कानूनी धंधा करने वाले बेरहम व्यापारी होते हैं। ये आसानी से बड़ी रकम बनाने की ताक में रहते हैं। उन्हें पकड़ना बड़ा मुश्किल होता है क्योंकि उनके संपर्क अपराध जगत् पैसे वालों और शक्तिशाली राजनीतिज्ञों के साथ होते हैं। अवैद्य व्यापार करने वाले संगठन ऐसी योजनाएँ बनाते हैं जो उनकी आय के वास्तविक स्रोत छिपा लेती हैं। ये हांगकांग और स्विट्ज़रलैंड जैसे देशों में स्थित वाली निगमों के माध्यम से दवाओं को बेचने का धंधा करते हैं। ये देश नशीली दवाओं के उत्पादक देशों से बहुत दूर स्थित हैं।

1985 में अधिकांश 81 सरकारों ने नशीली दवाओं के संयुक्त राष्ट्र के आयोग को पेश अपनी वार्षिक रिपोर्ट में नशीली दवाओं के अवैध व्यापार के अस्तित्व को स्वीकारा है। नशीली दवाओं के वितरण के लिए सुनिश्चित मार्ग है। उदाहरण के लिए, कुछ देशों में दवाओं का उत्पादन होता है, तो कुछ देशों का उपयोग दवाओं को लाने ले जाने के लिए किया जाता है और कुछ लोगों ले जाकर बेचा जाता है। इन तीनों प्रकार के देशों में नशे की लत की दर ऊँची है।

अधिकारी गण प्रतिदिन अधिक से अधिक अवैध नशीली दवाओं को ज़ब्त कर रहे हैं, लेकिन यह वास्तव में चोरी-छिपे लाई जाने वाली दवाओं का एक शतांश भी नहीं है। अब सभी देश मिलकर इस अवैध धंधे को रोकने का मिलकर प्रयास कर रहे हैं। वे :

i) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नशीली दवाओं के अवैध व्यापार को रोकने के लिए कार्यनीति बना रहे हैं।

ii) नशीली दवाओं के उत्पादन को घटाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

iii) अधिक सख्त दंड और रोकथाम के कार्यक्रम तैयार कर नशीली दवाओं के प्रति जन-सामान्य के आकर्षण को कम करने का प्रयास कर रहे हैं।

अंत में, एक बात ओर ध्यान दिलाना ज़रूरी है कि जहाँ नशीली दवाओं के उत्पादन, बिक्री और खपत को कम करने के लिए सम्मिलित रूप से सख्त उपाय किए जा रहे हैं, वहीं शराब के लिए ऐसा कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। अधिकांश सरकारों के लिए शराब राजस्व का अच्छा साधन है। शराब पर नियंत्रण के लिए केवल शराब के विज्ञापनों और जन-संचार माध्यमों में उसके समर्थन पर रोक लगाई गई है। लेकिन भारत में ही सरकार की नीति में स्पष्ट विरोध दिखाई देता है। मद्य निषेध एक बहुत ही मूल्यवान आदर्श है, लेकिन बहुत-सी राज्य सरकारें अपने राजस्व का बहुत बड़ा भाग शराब के लाइसेंस और बिक्री से प्राप्त करती हैं।

नशीली दवा के रूप में शराब दूसरी नशीली दवाओं से यदि व्यसनकारी और खतरनाक नहीं है तो उनसे कम भी नहीं है। शराब के नशे में गाड़ी चलाने के कितने ही लोगों की जान से हाथ धोना पड़ता है। शराब की लत के कारण व्यक्ति आपराधिक गतिविधियों में फँस जाता है। इसके कारण परिवार और व्यक्ति दोनों तबाह हो जाते हैं। उद्योगों को हानि उठानी पड़ती है तथा कितनी ही दुर्घटनाएँ होती हैं।

अत: यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिकांश सरकारें इसे अत्यधिक हानिकारक नशीली दवा और जनता का पहला दुश्मन मानने में संकोच करती हैं।

कोष्ठक 15.02

नशीली दवाओं पर शिक्षा का उद्देश्य नशीली दवाओं के उपयोग को घटाना है। विधायकों की भूमिका में नीति-वादी, कानूनवेत्ता और राजनीतिज्ञ इस उद्देश्य की ओर आकर्षित हो सकते हैं। औषधि विज्ञान की दृष्टि से हमारे सामने समस्या यह है कि हम नशीली दवाओं के इस्तेमाल पर रोक क्यों लगाएँ? फिर कुछ दवाओं के इस्तेमाल पर रोक क्यों लगाएँ? फिर कुछ दवाओं का प्रयोग तो हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में युगों से हो रहा है। इस प्रकार की मन:प्रभावी दवाओं पर प्रतिबंध लगाना आसान नहीं है।

नशीली दवाओं के प्रचलन की रोकथाम बीच का रास्ता अपनाकर की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

i) कम से कम लोगों को नशीली दवा की लत का शिकार बनने देना यानी उनकी संख्या में कमी लाना;

ii) नशीली दवा के इस्तेमाल से होने वाली हानि को रोकना;

iii) पूर्व व्यसनग्रस्त लोगों का सुगम पुनर्समाजीकरण करना।

इन उद्देश्यों का उल्लेख करना तो आसान है लेकिन उन्हें कार्यान्वित करना बहुत कठिन है।

15.9 हस्तक्षेप : उपचार, पुनर्वास और रोकथाम

सौभाग्य से नशीली दवाओं के व्यसन-रूपी रोग का उपचार किया जा सकता है। शारीरिक बीमारी की तरह इसमें भी दवा की ज़रूरत होती है लेकिन यह उपचार की लत का इलाज नहीं। इसका उपयोग भूख बढ़ाने, सहनशक्ति और दम-खम बढ़ाने, विनिवर्तन के लक्षणों को काबू में लाने और इस लत के कारण होने वाली दूसरी बीमारियों के इलाज के लिए किया जा सकता है। मूल रूप से इस उपचार का उद्देश्य शराब और दूसरी तरह की नशों के इस्तेमाल को उस समय तक पूरी तरह छुड़ाना होता है, जब तक पुन: एक बार उसे दवा या शराब लेने की इच्छा या प्रवृत्ति समाप्त न हो जाए। नशा छोड़ने के बाद कभी-कभार फिर उसे लेने की इच्छा होना स्वाभाविक है।

इस अवस्था की शुरुआत निर्विषीकरण के बाद होती है। यह वह अवधि होती है जब शराब या दवा को लेना बंद कर दिया जाता है। इस दौरान रोगी की डॉक्टरी देख-रेख की जाती है। इसमें रोगी और उसके परिवार को सलाह द्वारा मनोवैज्ञानिक सहायता दी जाती है। यह सलाह व्यक्तिगत रूप से, सामूहिक रूप से पति-पत्नी के स्तर पर या पारिवारिक स्तर पर दी जाती है। इसका उद्देश्य नौकरी, वित्त, मनोरंजन तथा पारिवारिक और रोज़मर्रा के जीवन में आने वाली समस्याओं को दूर करना होता है। इसमें हमारा ध्यान रोगी की मनोवृत्ति को बदलने, उसके रहन-सहन के ढंग में सुधार लाने और समाज में उसका जो स्थान पहले था, उसे फिर से दिलाने की ओर रहता है। यह काम उसे नौकरी पाने में मदद करके, परिवार और समाज में उसे स्थान दिलाकर मनोरंजन तथा हॉबी में आनंद ले सकने योग्य बनाकर किया जा सकता है। साथ में इनसे जुड़ी भावनात्मक समस्याओं को सुलझाने और रुपये-पैसे व आराम-चैन के दूसरे साधन खोजने जैसे रोज़मर्रा के मामलों को भी गहराई से समझने की ज़रूरत होती है।

उपर्युक्त अवस्थाओं के लिए विभिन्न तरीकों और संसाधनों का इस्तेमाल किया जा रहा है शारीरिक संचालन की व्यवस्था डॉक्टरों के मार्गदर्शन में (विशेष/सार्वजनिक) अस्पतालों में, विशेष केंद्रों में अथवा घरों में भी की जा सकती है। मनोवैज्ञानिक सहायता की व्यवस्था नीचे दिए स्थानों में की जा सकती है :

i) अस्पतालों, सार्वजनिक-अस्पतालों, मानसिक अस्पतालों, निजी अस्पतालों या लत को छुड़ाने के लिए खोले गए केंद्रों में;

ii) नशे की लत से उबरे लोगों या फिर पेशेवर लोगों (डॉक्टर आदि) द्वारा चलाए जाने वाले दिवसीय या आवासीय संस्थानों में; और

iii) एल्कोहलिक्स एनोनिमस/नर्कोटिक्स एनोनिमस नामक संस्था द्वारा, जिसे नशे की लत से उबरे लोगों ने बनाया है। यह इस संस्था के सदस्यों और दूसरे लोगों की संयमी बनने और नशे से दूर रहने में मदद करती है। नशीली दवाओं या शराब की लत छूटने के बाद ठीक हुए गुमनाम मद्यपियों (शराबियों) के लिए एक भाईचारा संस्था बनाई गई है। इसका उद्देश्य दूसरे व्यसनियों और स्वयं को संयत रखना या शराब और नशीली दवाओं से दूर रहने के प्रेरणा देना है।

नशे की लत से उबरने या निर्विषीकरण के बाद आदमी को समाज में अपना स्थान बनाने या यूँ कहें अपने दायित्वों को पूरा करने और अपने अधिकारों को पाने के लिए कई तरह की परिस्थितियों या कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। नशे के शिकार लोगों को शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि से इन परिस्थितियों का मुकाबला करने में मदद करना ही पुनर्वास की प्रक्रिया है। इस प्रकार रोज़गार दिलाने या उसमें शामिल करने का काम इस प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण पहलू है। इन्हें हम आमदनी देने वाली परियोजनाएँ चलाकर और नौकरियाँ दिलाकर कर सकते हैं।

संक्षेप में, पुनर्वास के लक्ष्यों को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है :

i) शराब और नशीली दवाओं से पूर्ण परहेज़

ii) व्यक्ति की शारीरिक स्थिति में सुधार करना

iii) अपने व्यवहार के प्रति स्वयम् उत्तरदायी होना

iv) अपने प्रति, दूसरों के प्रति और आध्यात्मिक शक्ति के प्रति विश्वास जगाना

v) स्वस्थ आत्म-दृष्टिकोण का विकास करना और अपने आपको समझना

vi) जीवन में सामाजिक रूप से स्वीकार्य और सार्थक लक्ष्यों का विकास करना

vii) आत्म नियंत्रण सीखना

viii) अपनी शिक्षा, नौकरी और सामाजिक भूमिकाएँ फिर से शुरू करना

ix) परिवार में फिर से अपना सही स्थान बनाना।

सोचिए और करिए 2

भाग 15.9 को ध्यान से पढ़िए और नशीली दवाओं की बिक्री को रोकना क्यों कठिन है, इसके कारणों की सूची बनाइए। हमारे समाज में दवाओं की बिक्री को कम करने के लिए कुछ ऐसे सुझाव दीजिए।

ये सारे लक्ष्य और अवस्थाएँ कठिन हैं कुछ ज्ञात तथा उन असंख्य अनजाने व्यवसायियों की संख्या को देखते हुए अधिकांश देशों में इनके लिए पर्याप्त चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। ठीक जिस प्रकार किसी शराबी या नशीली दवाओं के व्यसनी की पहचान और उसे अभिप्रेरित करना कठिन है उसे तरह फिर से शराब और दवाओं की लत पड़ने पर (जो बहुत स्वाभाविक है) उसे संभालना और दुबारा लत पड़ने पर उसकी देखभाल की व्यवस्था करना भी कठिन है। इसके

अलावा, व्यावसायिक दृष्टि से उसे फिर से काम पर लगाना और भी दुष्कर है। इसका कारण एक तो सामाजिक बदनामी है और दूसरा बहुत से देशों में साधनों की कमी भी है।

इस प्रकार दवाओं के गलत इस्तेमाल को रोकने के काम का महत्त्व और बढ़ जाता है। इसके लिए नशीली दवाओं की आपूर्ति और माँग दोनों को कम करना होगा। यानी यह देखना होगा कि नशीली दवाएँ और शराब खुले रूप से बेची जाएँ और आसानी से उपलब्ध न हों। दूसरे लोगों को यह समझाया जाए कि इनकी लत के क्या बुरे परिणाम होते हैं ताकि वे उनसे दूर रहें। लोगों को नशीली दवाओं और शराब से दूर रखने के लिए मनोरंजन और रोज़गार सेवाओं की पर्याप्त सुलभ होनी चाहिए।

दूसरी ओर, दवाओं की बिक्री को रोकने के लिए समान और कठोर कानून और उनका लागू होना जरूरी है। ऐसे अति-संवेदनशील वर्गों की लत से होने वाली समस्याओं के बारे में सावधान करना होगा। उन्हें जीवन में आने वाली नियमित और विशिष्ट समस्याओं से निपटने की शिक्षा देनी होगी ताकि उन्हें नशीली दवाओं के व्यसन से दूर रखा जा सके। लत की रोकथाम के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों पर जो भी पैसा, प्रयत्न और समय खर्च होगा उसका शराब और दवा की लत को कम करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण होगा।

बोध प्रश्न 3

सही उत्तरों पर टिक (✓) का निशान लगाइए।

1) समाज में अवैध दवाओं के उपयोग को बढ़ाने के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित दोषी हैं :

   क) पाश्चात्य संगीत गायक

   ख) दवाओं का अवैध व्यापार करने वाले

   ग) ज़रूरतमंद लोगों तक चोरी-छिपे दवा पहुँचाने वाले

   घ) सरकारी नीति बनाने वाले

2) जिन्हें नशीली दवा आदि की लत लग जाती है, उनके पुनर्वास के निम्नलिखित ध्येय हैं :

   क) उन्हें शिक्षा और नौकरी संबंधी तथा पारिवारिक और सामाजिक भूमिकाओं के निर्वाह में सहायता करना

   ख) पूरी तरह से परहेज़ करना

   ग) आत्म-विश्वास बढ़ाना और आत्म-नियंत्रण

   घ) उपर्युक्त सभी।

15.10 सारांश

इस इकाई के शुरू में विश्वभर में दवाओं और शराब के गलत इस्तेमाल की स्थिति के बारे में पाया गया है। इसके बाद नशीली दवा और शराब (एल्कोहल) से क्या अभिप्राय है, इसकी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है तथा उनके दुरुपयोग, व्यसन, अतिमद्यपता, निर्भरता, सहनशक्ति और विनिवर्तन जैसी अवधारणाओं के बीच अंतर को समझाया गया है। फिर विभिन्न दवाओं का विवरण तथा अतिमद्यपता और व्यसन की प्रक्रिया की व्याख्या की गई है। इसके बाद अतिमद्यपता, शराब और दवाओं की लत के शरीर क्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों का विवरण दिया गया है। इस इकाई के अंत में नशीली दवाएँ और

अपराध तथा नशीली दवाओं की लत एवं अतिमद्यपता के उपचार, पुनर्वास और रोकथाम से संबंधित महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में चर्चा की गई है।

15.11 शब्दावली

लत या व्यसन (Addiction) : कुछ रासायनिक पदार्थों (दवा या शराब आदि) के अभाव में नियमित जीवनचर्या में असमर्थ होने को रोग कहा जाता है।

शराब (Alcohol) : यह ऐसी नशीली दवा है जिसकी लत लग जाती है और यह शरीर और मन के सामान्य कार्यकलापों को प्रभावित करती है।

अतिमद्यपता (Alcoholism) : यह एक दीर्घकालिक रोग है जिसमें व्यक्ति सामान्य से बहुत अधिक मात्रा में और बार-बार शराब पीता है। इसके उसका कामकाज, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन प्रभावित होता है।

गांजा, चरस आदि (Cannibis) : भांग के पौधे के विभिन्न हिस्सों से तैयार की जानी वाली नशीली दवाएँ।

निर्भरता (Dependence) : शारीरिक : नशीली दवा का सेवन किए बिना सामान्य शारीरिक कार्यकलाप संभव नहीं होते। मनोवैज्ञानिक : व्यक्ति हमेशा नशीली दवाओं के बारे में सोचता रहता है कि कैसे उसका उपयोग करे, कैसे उसे प्राप्त करे, आदि यह व्यक्ति नशीली दवा का सेवन किए बिना भावनात्मक दृष्टि से सामान्य जीवन नहीं जी सकता।

अवसादक दवाएँ (Depressants) : ऐसी दवाएँ जो मस्तिष्क की क्रियाशीलता को मंद कर देती हैं।

निर्विषीकरण (Detoxification) : दवाओं के प्रयोग को बंद करने की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा धीरे-धीरे व्यक्ति दवा के प्रयोग के बिना जीने का आदी बनाया जाता है।

नशीली दवा (Drug) : उस रासायनिक पदार्थ को कहते हैं जिसे लेने से मस्तिष्क पर उसकी रासायनिक प्रतिक्रिया होती है। इसका शरीर और मन के सामान्य कार्यकलापों पर प्रभाव पड़ता है।

नशीली दवाओं का दुरुपयोग (Drug Abuse) : (डॉक्टरी या ग़ैर-डॉक्टरी) रासायनिक पदार्थों का इतनी मात्रा, शक्ति में बार-बार उपयोग, जिसके कारण शारीरिक तथा मानसिक कार्यकलापों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

विभ्रांतिकारक दवाएँ (Hallucinogens) : ऐसी दवाएँ जिनके उपयोग से व्यक्ति के देखने, सुनने और अनुभव करने का ढंग बदल जाए।

स्वापक दवाएँ (Opiates) : अफ़ीम से बने ऐसे कृत्रिम पदार्थ जिनका अफ़ीम के समान प्रभाव होता है।

पुनर्वास (Rehabilitation) : यह निर्विषीकरण के बाद की अवस्था है। नशे की आदत पड़ जाने के बाद समाज में जिन अधिकारों और दायित्वों से व्यक्ति वंचित हो गया था, समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में उन्हें फिर से पाने के लिए सहायता देना।

उद्दीपक दवाएँ (Stimulants) : ऐसी दवाएँ जिनके उपयोग से उत्तेजना का अनुभव हो क्योंकि ये मस्तिष्क की क्रियाशीलता को बढ़ा देती हैं।

सहनशक्ति या सह्यता (Tolerance) : पहले की तरह दवा के प्रभाव को पैदा करने के लिए ज़्यादा और बार-बार दवा का सेवन करना।

विनिवर्तन (Withdrawal symptoms) : दवा के व्यसनियों को यदि दवा का उपयोग अकस्मात बंद कर दिया जाए तो शरीर में बहुत ही कष्टदायक लक्षण प्रकट होते हैं। इससे शारीरिक बेचैनी से लेकर उल्टियाँ और ऐंठन आदि होती है।

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) नशीली दवाओं के उस इस्तेमाल को दवाओं का दुरुपयोग कह सकते हैं, जिसमें दवा की मात्रा, बारंबारता या लेने के ढंग के व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक कार्यक्षमता प्रभावित होती है। नशीली दवा चाहे औषधि के रूप में डॉक्टर द्वारा दी गई हो या अन्य प्रयोजन से ली गई हो, दवा के इस प्रकार के गलत सेवन से दवा की लत लग जाती है जिसका मतलब है कि आदमी नशीली दवा के बिना नहीं जी सकता।

2) विभिन्न प्रकार की दवाओं का विवरण नीचे दिया गया है :

   क) उद्दीपक दवाएँ, यानी ऐसी दवाएँ जो मस्तिष्क की क्रियाशीलता को बढ़ा देती हैं (ऐम्फीटेमाइन्स)।

   ख) अवसादक दवाएँ यानी ऐसी दवाएँ जो मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम कर देती हैं। (एल्कोहल या शराब अवसादक हैं) उदाहरण के लिए, वैट्पुइम।

   ग) विभ्रांतिकारक दवाएँ यानी ऐसी दवाएँ जिनका हमारे देखने, सुनने और अनुभव करने पर प्रभाव पड़ता है, जैसे एलएसडी।

   घ) गांजा आदि दवाएँ, यानी भांग के पौधे के विभिन्न हिस्सों से तैयार की जानी वाली दवाएँ जैसे भांग, चरस।

   ङ) स्वापक (नींद लाने वाली) दवाएँ, यानी ऐसी दवाएँ जो अफ़ीम से तैयार की जाती है या अफ़ीम की तरह प्रभावित करती हैं जैसे स्मैक, हेरोइन।

बोध प्रश्न 2

1) रोग के रूप में अतिमद्यपता के चार लक्षण हैं :

क) यह किसी मनोवैज्ञानिक समस्या का लक्षण मात्र नहीं होता है बल्कि यह स्वयं रोग है जिसमें शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याएँ पैदा होती हैं।

ख) यह उत्तरोत्तर बढ़ने वाली बीमारी है यानी इसका इलाज न किया जाए तो मरीज की हालत बिगड़ती जाती है।

ग) यह बीमारी इतनी गंभीर हो सकती है कि यदि इलाज न किया जाए तो मृत्यु तक हो सकती है।

घ) इस बीमारी का इलाज हो सकता है। यानी यदि सही उपचार किया जाए तो इसे ठीक किया जा सकता है।

2) जीवन में कभी-कभी तनाव के समय में (विशेषत: किशोरावस्था में) पारिवारिक परिस्थितियाँ तनाव को और बढ़ा देती हैं जिससे नशे की लत पड़ होती है। परिवार द्वारा व्यक्ति पर अत्यधिक नियंत्रण या बिल्कुल नियंत्रण न होने के कारण भी ऐसा होता है। टूटे परिवारों या ऐसे परिवारों में जिसमें समुचित तालमेल न हो और परिवार में कलह आदि आम बात हो तो परिवार के सदस्य को नशीली दवा या शराब लेने की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है। इसके अलावा यदि परिवार के किसी बड़े सदस्य को दवा आदि की लत हो, तो छोटे सदस्यों को उसका अनुसरण करके शराब या नशीली दवाओं की लत लग सकती है।

बोध प्रश्न 3

1) ख

2) घ